

चो दयामास मदर्धम्येता निपुण्याणि आनयेति त्रिप्रितनवनी ॥१०॥ १११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

पुण्याणि तानि हस्तातु तदो गेन्द्रवर्गना ॥ भगिनीं चो दयामास पुष्पाथं चारुलोचना ॥ १०॥ सा भर्त्रे सर्वमानं च पृथुचिः सरुचिरानना ॥ भगिन्या भाषिते सर्वमृषि
स्तच्चाभ्यनंदत ॥ ११॥ ततो विपुलमानाध्य देवशर्मा महातपाः ॥ पुष्पाथं चो दयामास गच्छुगच्छेति भारत ॥ १२॥ विपुलस्करुरोर्वाक्यमविचार्य महात
पाः ॥ स तथेत्यब्रवीद्राजं स्तं च देवशं जगाम ह ॥ १३॥ यस्मिन् देवो तु ता न्यास च पतिता निनभस्तलात् ॥ अग्न्या नान्यपि तत्रास न कुस्मान्यपराण्यपि ॥
स ततस्ता निजग्राहदिव्या निरुचिराणि च ॥ प्राप्तानि स्वेन तपसा दिव्यगंधा नि भारत ॥ १४॥ संप्राप्य तानि प्रीता त्मागुरोर्वचनकारकः ॥ तदा जगाम तूर्णं च
वंपाचं पकमालिनीं ॥ १५॥ स वने निजने तात ददर्श मिथुनं नृणाम् ॥ चक्रवर्त्तं गृहीत्वा पाणिना करं ॥ १६॥ तत्रैकं स्तूणीमगम च तस्य देव विवर्तयन् ॥
एकं स्तूकं न तदाराजं श्वक्रतुः कलहं ततः ॥ १७॥ त्वं शीघ्रं गच्छसीत्येको ब्रवीन्नेति तथा परः ॥ नेति नेति वने तोराजन् परस्परमथोचतुः ॥ १८॥ तयोर्विस्पर्धतो
रेवं शपथोयमभूत्तदा ॥ सहसो हि श्य विपुलं ततो वाक्यमथोचतुः ॥ १९॥ आ वयो ररुतं प्राहयस्तस्या धृष्टिजस्यैव ॥ विपुलस्य परे लोके या गतिः सा भवे
दिति ॥ २०॥ एतच्छ्रुत्वा तु विपुलो विषण्णवदनो भवत् ॥ एवं तीव्रतपाश्चाहं कष्टश्चायं परिश्रमः ॥ २१॥ मिथुनस्यास्य किं मे स्यात्कृतं पापं यथा गतिः ॥ अनिष्टा
सर्वभूतानां कीर्तिता नेन मे द्यौर्वै ॥ २२॥ एवं संचिंतयन्नेव विपुलो राजसत्तम ॥ अवाङ्मुखो दीनमना दधौ दुष्कृतमात्मनः ॥ ततः षडन्यान्पुरुषानक्षैः कान्चन
राजैः ॥ अपश्यदिव्यमानान्वैलो भर्त्रो न्वितोस्तथा ॥ कुर्वतः शपथं तेन यः कृतो मिथुनेन तु ॥ विपुलं वै समुद्दिश्य ते पिवाक्यमथाब्रुवन् ॥ लोभमास्थाय यो
स्माकं विषमं कर्तुमुत्सहेत् ॥ विपुलस्य परे लोके या गतिः सा मवाप्नुयात् ॥ एतच्छ्रुत्वा तु विपुलो नापश्यदग्निं संकरं ॥ जन्मप्रभृति कैरव्य कृतपूर्वमथात्मनः ॥ २३॥

मिति परिहरति एवमुभावपि सत्यवादिनो नानृतं शपथं चक्रतुरिति ॥ १९॥ २०॥ २१॥ अयं मिथुनस्य परिश्रमः कष्ट इत्यन्वयः ॥ गतिरनिष्टेति सार्धः ॥ २२॥ २३॥ २४॥ षड्भूतं चो दित्यमामात्रं अन्त्योच्यं जेतुमिच्छतः वसे
तादयो हि दृष्टा दोन्ममराजीनभि संधायायं मदीयं गेयं मदीयं इति विवर्तनेनेपि मतं भेदान्ना नृतवादिनः मीनादिर्वसंत इति पक्षे हि दृष्टो ग्रीष्मानर्गतेनः मेवादिपक्षे वसंतोर्गतेन इति ॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥